

Dhoomimal
ART CENTRE

8A Connaught Place Level I & II
Inner Circle, New Delhi - 110001
tel : +91 11 23324492, 41516172, 23717025
e-mail : info@dhoomimalartcentre.com
www.dhoomimalartcentre.com

An Innocent Relation



Manoj Kachangal

अनिस

For Nirvika and Divyansh

धूमिम

An Innocent Relation

Paintings & Poems

by

Manoj Kachangal

Visual Arts Gallery
India Habitat Centre, New Delhi
2nd to 7th August 2013

Dhoomimal Art Centre
9th - 21st August 2013



Dhoomimal
ART CENTRE

विदग्ध रंगमय आकाश में एक सलेटी चन्द्रमा

मनोज कचंगल की कला में उपस्थित जिस तत्त्व ने मुझे शुरु से आकर्षित किया, वह है— विनम्र सादगी। मनोज के चित्रों में रंगों की आत्मीय आभा भावक की दृष्टि को अपने 'सहज' सौन्दर्य से आकर्षित करती रही है। यह 'सहज' उतना सरल नहीं है। यह कबीर का 'सहज' है, जो निर्भय है और जटिल भी। मनोज कचंगल के चित्रों को प्राथमिक रूप से सुन्दर कहने का मन इसलिए ही नहीं होता कि यहाँ निर्दोष रंगों का व्यवहार है, बल्कि इसलिए कि इनका भाष्य मनुष्य के समकाल के अनेक अन्तर्द्वन्द्वों और विद्रोह की ऊर्जा से समृद्ध है। मनोज कचंगल तटस्थ और उदासीन रचनाकार नहीं हैं, यह उनके चित्रों के साथ तनिक देर बिताने वाला कोई भी दर्शक महसूस कर सकता है।

किसी भी रचनाकार का जीवन—दर्शन उसकी रचना में उपस्थित होता है। मनोज कचंगल के चित्रों में भी उसे पहचाना और प्राप्त किया जा सकता है। अपने समय और सरोकारों के द्वन्द्वों और संघर्षों को कोई रचनाकार किस सलीके से व्यक्त करता है कि रचना की त्वचा पर कोई खरोंच तक न दिखे, यही कला—कौशल है। मनोज इसमें निपुण हैं। मनोज की कृतियों में एक भीषण पीड़ा और मनुष्यता की पुकार अनुराग की तरह व्यक्त होती रही है। ऐन्द्रिक आकर्षण और मानवीय मूल्यों का सन्तुलन मनोज कचंगल की कृतियों में प्रकृति के बहुवर्णी व्यवहार में घटित होता है। इसीलिए मनोज के भीतर का मनुष्य मूलतः नैसर्गिक परिवर्तन को महत्त्व प्रदान करता है। इस कथन का यह आशय कतई नहीं है कि रचनाकार इस आवश्यक परिवर्तन को अपनी निजी जैविक जिम्मेदारी नहीं मानता। मनोज कचंगल की कृतियों में हिंसा, उन्माद, अराजकता का स्पष्ट बहिष्कार मानवीय नैतिकता की पक्षधरता का प्रमाण है। रचनात्मकता की शक्ति में यह भरोसा ही है कि मनोज कचंगल सभी प्रश्नों, चिन्ताओं और समस्याओं का हल रचना के भीतर ही प्राप्त करना चाहते हैं।

मनोज कचंगल सौन्दर्यवादी चित्रकार नहीं हैं, जैसा कुछ समीक्षक मानते रहे हैं। अतः दोबारा अर्ज कर रहा हूँ कि ऐसा मानना एक सतर्क और समर्थ रचनाकार की प्रतिभा और उसके प्रसार के साथ छल ही है।

वैश्विक देशकाल और उसके भीतर तथा साथ ही भारतीय देशकाल में व्याप्त षड्यंत्रकारी शक्तियों की निरंकुश अराजकता किसी से भी छुपी नहीं है। मनुष्य की उदार सहजातीयता, स्मृति, संवेदनशीलता तथा स्वप्नों के नष्टप्राय होते जाने का संकट इसी अराजकता का परिणाम है। यह स्थिति असहनीय होती गई है। मनोज के इन चित्रों में अपने पूर्व प्रदर्शित चित्रों की तुलना में अधिक स्पष्ट आक्रोश देखकर खुशी हुई है। लाल और काले रंगों का ही व्यवहार नहीं बदला है बल्कि अन्य रंग भी अपनी नई भूमिका में आक्रामक रूप से उपस्थित हैं। ब्रश के अनियमित 'स्ट्रोक्स' में उस 'सतर्क लापरवाही' को आसानी से पहचाना जा सकता है, जो बाधाएँ पार करते समय दूर—दूर स्थित आधारों पर पाँव जमाने की कोशिश में होता है। आज के मनुष्य की स्थितियाँ क्या इस दशा से भिन्न हैं ?

मनोज कचंगल के इन चित्रों में भारतीयता की छाप है। यहाँ छाया और प्रकाश का विवर्त गूढ़ रहस्यों की ओर हमें बरबस ही आमंत्रित करता है, यह रहस्य अलौकिक नहीं हैं, इनका सम्बन्ध हमारे जीवन के पर्यावरण से जुड़ा है। यह 'विस्थापन' का दंश है, जो प्रतिदिन हमारी एक—एक मामूली ख्वाहिश की जगह हमें अनचाहे ही मिलता है "हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश पे दम निकले" (गालिब)। यह विस्थापन भौगोलिक विस्थापन भर नहीं है, आत्म—विस्थापन भी है। इस विचलन और व्याकुलता को मनोज कचंगल के चित्रों में पहचाना जा सकता है। यह सही राह खोजने का भटकाव है। इसीलिए मनोज को अपनी जड़ों, अपनी परम्परा, इतिहास और अनुभवजन्य अतीत में शरण मिलती है। और विदग्ध रंगमय आसमान में एक सलेटी चन्द्रमा आश्वस्त की तरह झलकता है।

कुमार अनुपम

जुलाई 2013

A Silver Moon in the Combusted Colourful Sky

The substance, present in the paintings of Manoj Kachangal, which has fascinated me from the very beginning, is its modest simplicity. In these paintings, the intimate glow of colours is used to fascinate the vision of the patrons by its instinctive curves. But this instinct is not so simple. This 'Instinct' is that of Kabir, which is fearless and complex too. These paintings are not exquisite only because of uses of immaculate colours, but also due to reason that its commentary is affluent of energies of lots of contemporary conflicts and revolts of man's land. Manoj Kachangal is not a neutral and an apathetic creator; this can be perceived by any patron of art by spending even a little bit of time with his paintings.

Every painter's philosophy of life is always present in his creations. This can be found and recognized in these paintings too. How nicely a painter expresses conflicts and clashes of his time and concerns, that even a single stroke of brushes cannot be seen on the surface of the creation, this is a skill of art. Manoj Kachangal is this type of painter genius. In his paintings, a deep pang and call of humanity is expressed as heartstrings. Poise of perceptible charisma and human values is found as multicolour aspects of nature in these paintings. That's why human of the inner core of Manoj basically gives importance to instinctive transformation. This statement doesn't mean that the creator doesn't accept his personal biological responsibility for this momentous transformation. The open antagonism of violence, terror, anarchy in these paintings, is an evidence of his favour to human virtues. It is the trust in nerve of creativity which urges Manoj Kachangal to aspire to find out the solutions of all the questions, concerns and problems in his paintings.

Manoj Kachangal is not an aesthetic painter, as few of critics used to assume. That's why it is humbly requested that accepting him an aesthetic is deception with expansion and brilliance of a competent and attentive painter.

Despotic anarchy of Conspirators imbued in global as well as in Indian ambience, is not hidden to anyone. The crisis of fading out generous symbiosis, reminiscences, sensitivities and dreams of man is direct outcome of this anarchy. This situation is been intolerable. I am delighted to see the growing naked resentments in these recent paintings relatively that was in his earlier paintings. The behavior of not only red and black colour has been changed but other colours are also more pushing in new roles. The attentive negligence can easily be identified in the spasmodic strokes of brushes, which is present in the effort of a man setting his foot on stone while crossing the hurdles. Are these circumstances of modern man different from this situation?

There is impression of Indian values in the paintings of Manoj Kachangal. Illusion of shades and lights forcibly invite us towards inscrutable mysteries but these mysteries are not other worldly. These are related to circumstances of our life. It is sting of displacement which we get in place of our trivial longings in daily life. 'Thousands of such longings, that we die on each longing (Ghalib)'. This displacement is not only geographical one, but this is displacement of soul too. This swerve and labyrinth can be recognized in these paintings. This swerve is to find out the right path or the intended course. That's why Manoj Kachangal's paintings resort in his heritage, his traditions, his history and his empirical past. And these paintings are a silver moon flickers in the combusted colourful sky like a happy-go-lucky.

Kumar Anupam

July 2013

Writeup translated by Amiyabindu Gupta



Untitled, Acrylic on Canvas, 36" X 36", 2011



Night, Acrylic on Canvas, 24" X 36", 2010



Untitled, Acrylic on Canvas, 24" X 24", 2009

डायरी

डायरी लिखते समय
हाशिया के साथ
कुछ जगह और छोड़ दी
रिक्त
एक एक शब्द लिखने
आशा है जिसे तुम भरोगी,

फिर मेरी डायरी की
प्रत्येक पंक्ति
शुरू हो जाएगी
तुम्हारे ही शब्दों से
या
सिर्फ शब्द से।

1999



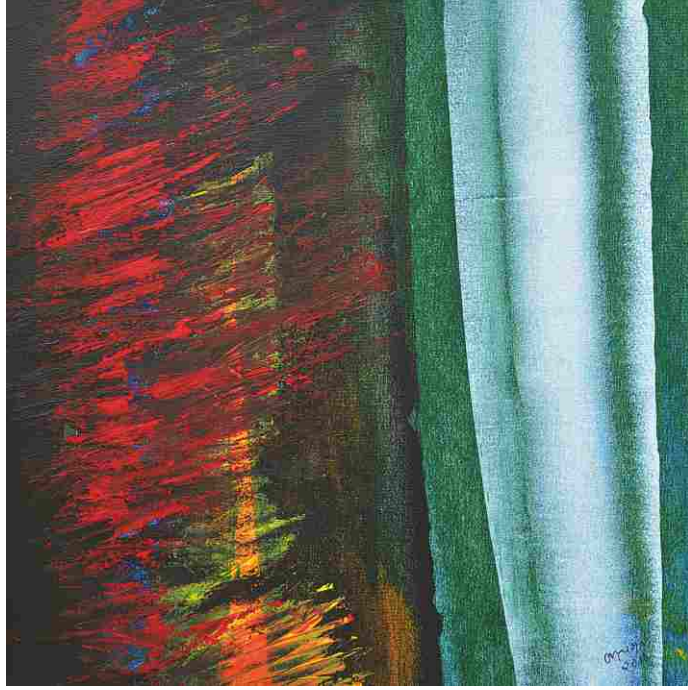
Visthapan, Acrylic on Canvas, 24" X 48", 2013



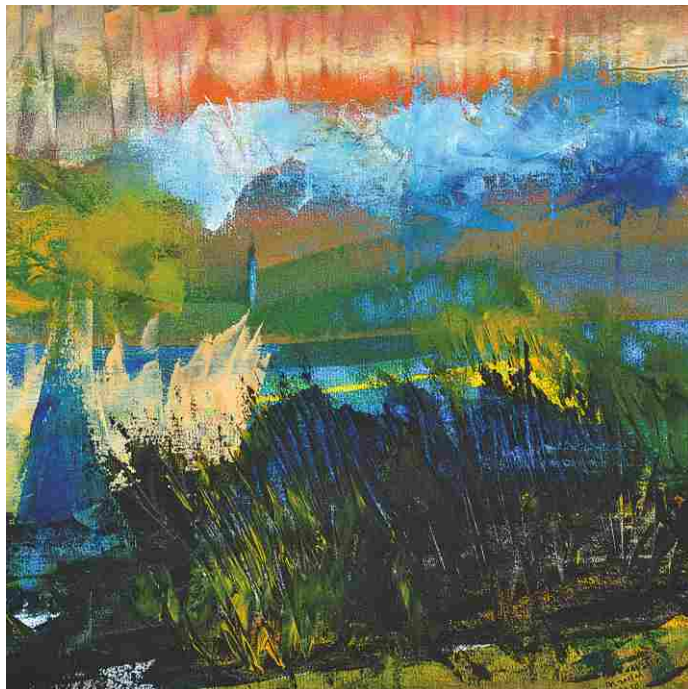
Untitled, Acrylic on Canvas, 40" X 54", 2011



Untitled, Acrylic on Canvas, 34" X 26", 2008 ▷



Symphony of Nature, Acrylic on Canvas, 20" X 20", 2010



Symphony of Nature, Acrylic on Canvas, 20" X 20", 2010

पीला दिन

एक पीला दिन
हँसता हुआ दिन
बिखेर देता है खुशियाँ
पीली सृष्टि में

पीली आवाज़, पीली सुगंध
पीले रिश्ते
पीले बंधन
तथा हमारा प्रणय भी
हो जाता है पीला
पीले दिनों में
जैसे
फूल रहा हो सरसों का खेत।

2000

वह

वह हवा बाँध सकती है
वह सूर्य से मिल सकती है
वह तारों की पहन सकती है माला
वह नक्षत्रों से बात कर सकती है।

वह चाय पी सकती है
और गिन सकती है
मेरी गर्म साँसें

वह दूर्वा पर
मेरे साथ लेट सकती है

मैं हूँ कि ओस हूँ।

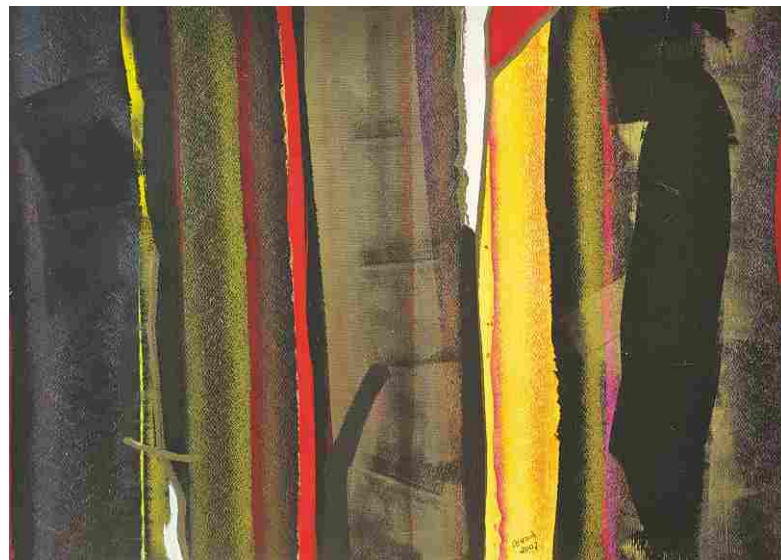
2001



Anrang, Acrylic on Canvas, 36" X 36", 2013



Ninaad, Acrylic on Paper, 19" X 29", 2008



Ninaad, Acrylic on Paper, 19" X 29", 2008

अनाम यात्रा

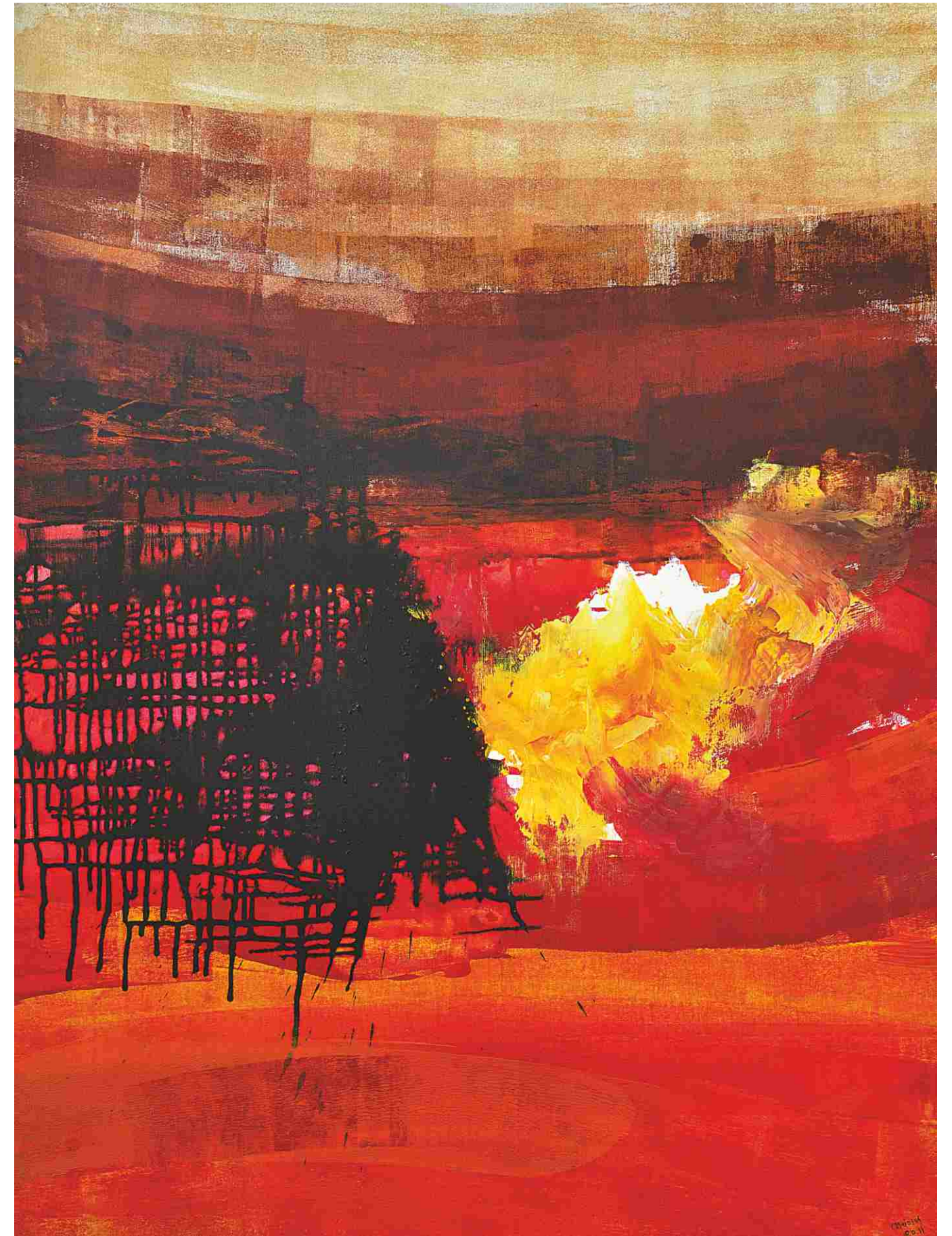
मेरी यात्रा
 एक अनाम यात्रा
 शब्दों की
 रंगों की रेखाओं की यात्रा

तय कर रहा हूँ
 हवा की फुसफुसाहट के सहारे
 खुद को खत्म करके।

पीले, नीले, हरे
 तथा काले दिनों में भी
 गतिमान हूँ अनवरत

और जारी है
 एक अनाम यात्रा।

2002



Visthapan, Acrylic on Canvas, 48" X 36", 2011



Untitled, Acrylic on Canvas, 34" X 28", 2008

तुम्हारे ही पास

मेरी शब्दहीन प्रार्थनाएँ
 तथा अपेक्षाहीन भावनाएँ लिये
 श्वेत प्रेम
 जिद्दी, नासमझ
 अमूर्त, शीर्षकहीन
 तुम्हारी साँसों की अनसुलझी गुथियों में
 शीर्षक पाने मौन खड़ा है
 तुम्हारे ही पास।

2001

निस्तब्ध मन

निस्तब्ध मन खो जाता है
 कहीं-कहीं उलझ जाता है
 उन जानी-अनजानी चीजों में
 निश्चित अनिश्चित दिशाओं में
 रंगो रेखाओं में,
 शब्दों में
 शब्दों के मायाजाल में।

उन्हीं पुराने अँधेरों में
 पुनः ढूँढने लगता है वही सुराग
 जिसमें से आ गई थी सूर्य किरण
 बेधड़क
 मार्ग दिखाने, एक दिशा का।

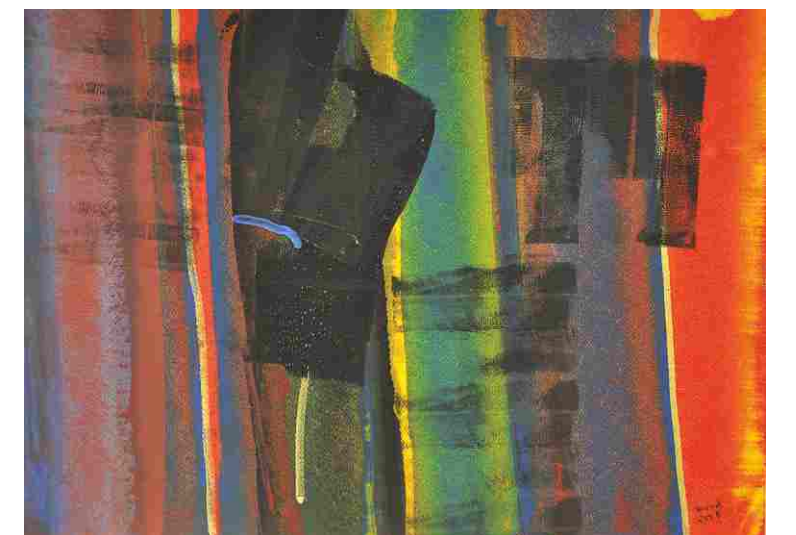
1999



Vivart, Acrylic on Paper, 19" X 29", 2007



Vivart, Acrylic on Canvas, 18" X 28", 2013



Vivart, Acrylic on Paper, 19" X 29", 2008



Nature, Acrylic on Canvas, 48" X 24", 2009



Nature-I, Acrylic on Canvas, 14" X 32", 2013

प्रणय को नमन

उस प्रणय को नमन
जिसकी गाथाएँ
आज भी गूँजती हैं
उन खंडहरों में
एक लय-संगति की तरह

उन शिल्पियों को नमन
जिन्होंने निर्माण किए
प्रणय की खातिर
अति विशाल भवन
जहाज, हिंडोला तथा मंडप की तरह।

कभी गूँजी होंगी
लयबद्ध प्रणय-ध्वनियाँ
संयोग में
खो गए होंगे वो
शून्य तथा वियोग में,

कभी रोया भी होगा संगीत
टूटी होगी लय
बदल गई होगी सिसकियों में।

इतिहास देता है गवाही
निर्मल प्रणय
माँगता है सिर्फ त्याग

मैं उन प्रणय के
पुजारी-पुजारन को
उन तमाम शिल्पियों को
प्रणाम करता हूँ।

2000

The Secret
Acrylic on Canvas
48" X 24", 2009





Ritambhra, Acrylic on Canvas, 16" X 16", 2010

तुम्हारा हँसना उत्सव

तुम्हारा हँसना
जैसे कि अवसाद में
खिल गया आकाश,
आकाश में बिखर गया नील
नील समा गया झील में
झील समा गई तुम्हारी आँखों में

नील समा गया नील में

जैसे कि हँसी समा गई अवसाद में
अवसाद बन गया उत्सव
शीर्षकहीन उत्सव,

मैं उत्सव तुम उत्सव
मैं अवसाद तुम अवसाद
जैसे अवसाद उत्सव में समा जाता है
क्या यह आशा
मैं तुमसे रख सकता हूँ
किसी शीर्ष पर खड़े हो
शब्दहीन प्रार्थना से
तुमको पुकार सकता हूँ
कि तुम आओ

और तुम्हारा हँसना
फिर बन जाएगा
सिर्फ एक उत्सव
प्रेमोत्सव।

2001



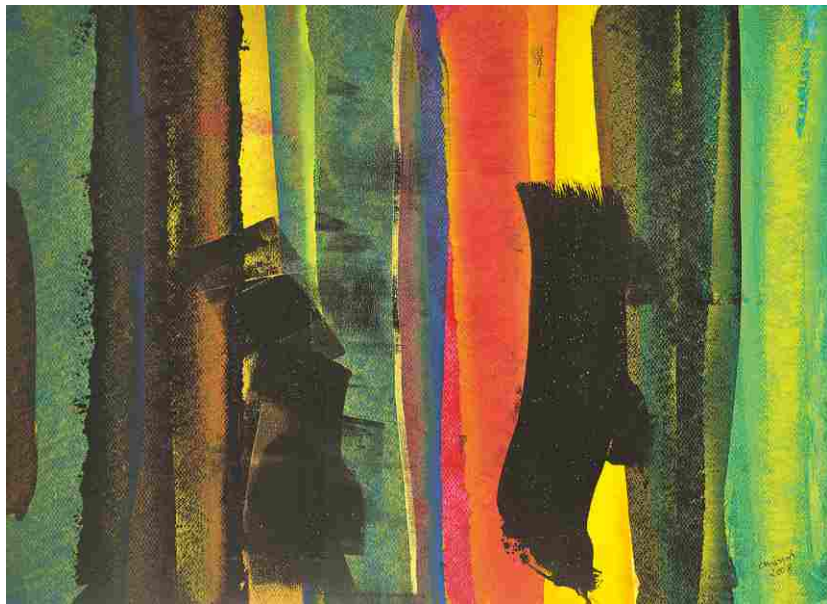
Sannate Mein Kilkari, Acrylic on Canvas, 20" X 50", 2013



Prem Khilne Laga, Acrylic on Canvas, 19" X 50", 2013



Nilay, Acrylic on Paper, 19" X 29", 2013



Alind, Acrylic on Paper, 19" X 29", 2008

प्रेम

पत्थरों से जुड़ी हैं
आस्थाएँ
बना है विश्वास,

व्यक्त करने भावनाएँ
काफी है एक ही फूल

मन की वेदना,
जमी है नमी
आँखों की कोर में,
वेदना रहस्य अन्तर्मन का,

खामोशी भी है भाषा,
प्रेम का प्रतिउत्तर
सिर्फ प्रेम,

हो जाती हैं शून्य
विविधताएँ विषमताएँ,
अन्तर अन्तराल
नहीं रहते शेष,

प्रेम एक तम शून्य,
समाया है जिसमें
सर्वस्व
मैं और तुम भी।

2003



Prashanti, Acrylic on Canvas, 18" X 28", 2013



Kalrav, Acrylic on Canvas, 13" X 14", 2013



Kalrav, Acrylic on Canvas, 13" X 14", 2013



Kalrav, Acrylic on Canvas, 13" X 14", 2013

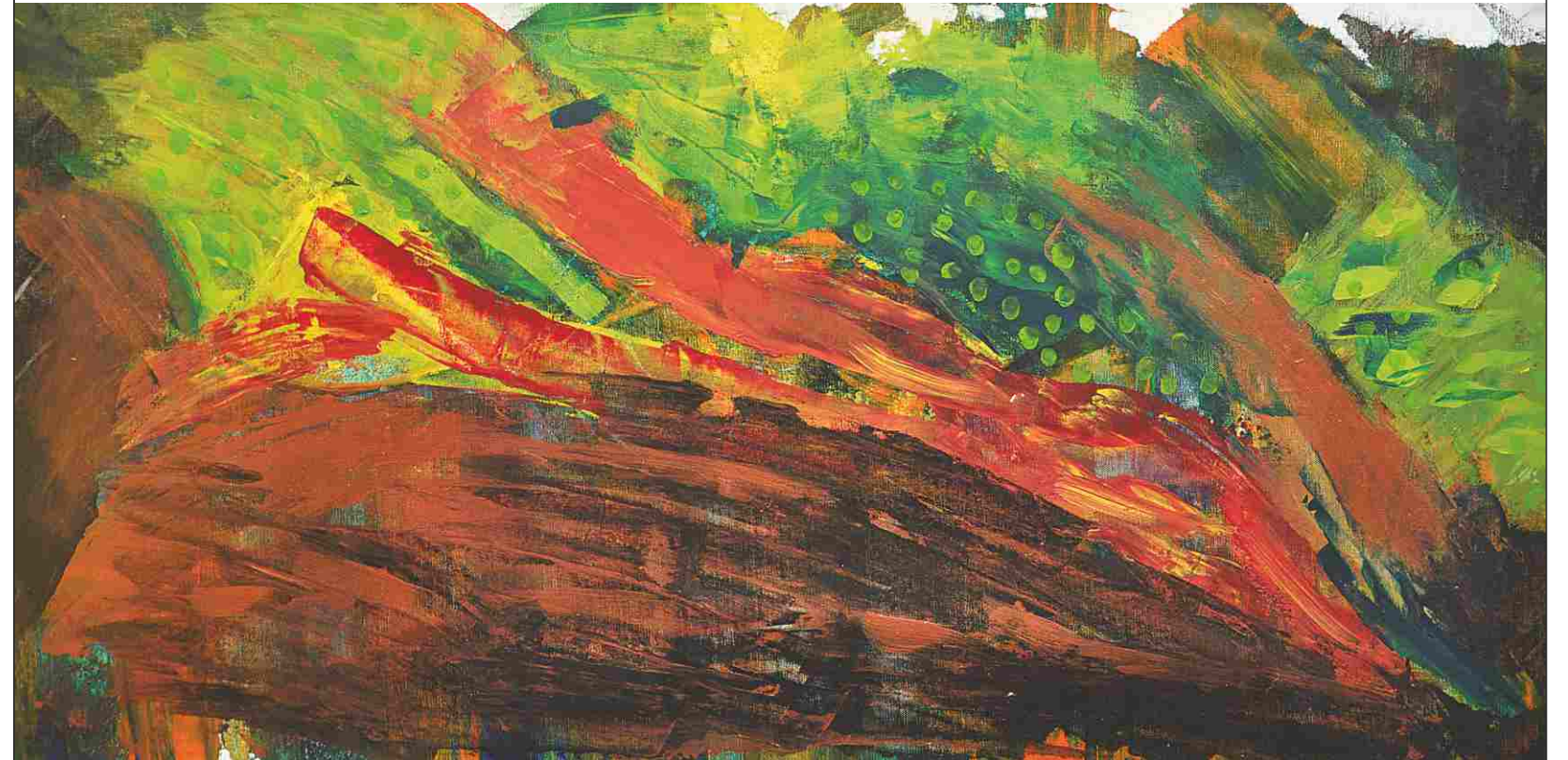
मंदिर की अंतिम सीढ़ी पर

मंदिर की अंतिम सीढ़ी पर
प्रार्थना के कुछ शब्द छोड़ आया

कुछ भावनाएँ, कुछ संवेदनाएँ छोड़ आया
थोड़ा-सा अपने को, थोड़ा-सा आपको छोड़ आया
प्रेम छोड़ आया, प्रेम का निनाद छोड़ आया

दो-चार फूल, दो-चार बूँदें
मंदिर की अंतिम सीढ़ी पर
प्रेम प्रार्थनाएँ छोड़ आया।

2003



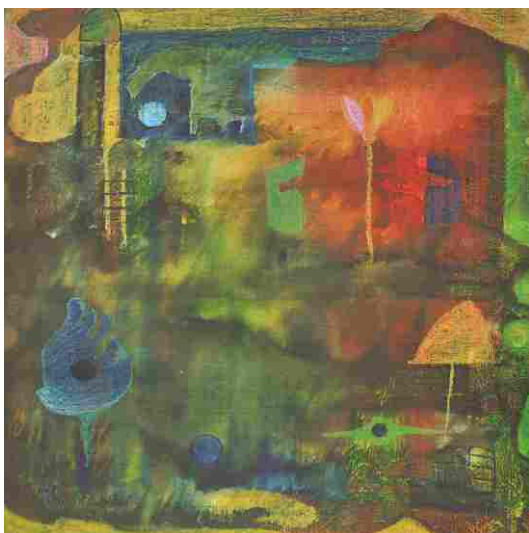
Akaal Champa, Acrylic on Canvas, 20" X 43", 2013



Untitled, Water Color on Paper, 16" X 16", 2000



Untitled, Water Color on Paper, 18" X 18", 2003



Untitled, Water Color on Paper, 16" X 16", 2000

मासूम रिश्ता

सन्नाटे में गूँजी,
एक किलकारी,

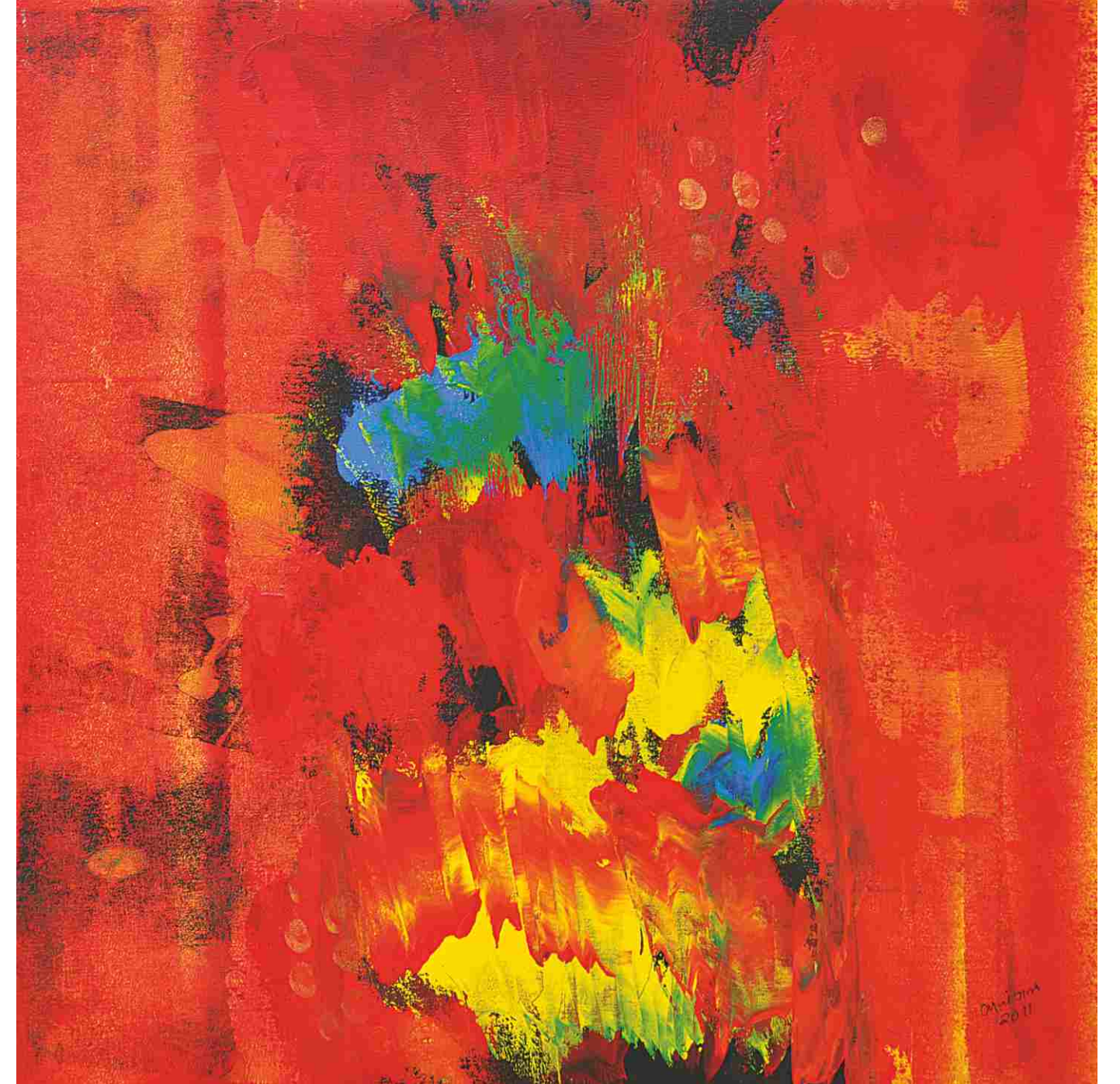
पतझड़ में पसर गया वसंत,
और उस अनाम चित्र को भी
मिल गया एक नाम,
मासूम रिश्ता,

ये मंदिर, ये रसोई,
ये घर अंदर बाहर
किताबें, रंग, चित्र, मेरे ये मित्र
और ये बिखरा सामान
सब अधूरे हैं तुम्हारे बिना,
बेटे को भी अच्छा लगता है
तुम्हारे ही साथ खेलना

आँगन खिल उठा,
तुम्हारे सिर्फ एहसास से,

ओ बेटा जल्दी घर आ जाओ,
हमेशा के लिए।

2013



Happiness, Acrylic on Canvas, 24" X 24", 2011



Manoj Kachangal

Manoj Kachangal born in Shadhora, Madhya Pradesh, India on July 5, 1979,

He did MFA in painting from Institute of Fine Arts, Indore in 2003.

In 2001 Madhya Pradesh Kala Parishad, Bhopal honoured him with Raza award.

His art works were auctioned at Tao Art Gallery, Mumbai – 2006 and Millennium Turks at Hotel Trident Hilton, Gurgaon – 2008.

There are over 20 major solo shows including Sublime Lands curated by Johny ML, Visual Arts Gallery, New Delhi – 2012, Jehangir Art Gallery, Mumbai – 2009, Apparo Art Gallery, Chennai – 2009, The Doors of Perception curated by Vinod Bhardwaj, Visual Arts Gallery, New Delhi – 2008, In Search of the Abyss curated by Bhavana Kakar, Mon Art Gallerie, Kolkata – 2008, Dharati – Amber curated by Moit Jain, Dhoomimal Art Center, New Delhi – 2007, Antaryatra, Nehru Center Art Gallery, Mumbai – 2007, A Consecration of Space, Ahmedabad – 2006.

Participated in various important group shows held across the country including the ones in Tao Art Gallery, Cima Art Gallery, Emami Chisel Art, Crimson the Art Resource, Jammart Art Gallery, GallerieNvya, Art Konsult, Religare Arts Initiative and in some group shows outside the country.

Manoj Kachangal also has participated in many significant art camps.

A book on the art of Kachangal "Doors of Perception, art of Manoj Kachangal" edited by Ratnottama Sengupta was published by Bharatiya Jnanpith, New Delhi, in 2008. Also a documentary film on Kachangal "Doors of Perception, art of Manoj Kachangal" was produced by Kalaroop Films (2008), which was directed by Pravesh Bhardwaj.

The artist's works are in the collection of Raza Foundation, Sunil Mittal of Airtel, Birla Academy of Art and Culture Kolkata, AIFACS New Delhi, Kala Parishad Bhopal, NCZCC Allahabad, Gifa Indore, ITM Gwalior; Visual Arts Gallery, India Habitat Centre, New Delhi; Antonio HelioWaszyk, CMD, Nestle India Limited; Gary Bennet, CEO, Max New York Life & India Glycols Limited. His works are also in various private collections in Nepal, Germany, France, USA and UAE.

Manoj Kachangal lives and works in Greater Noida.

कुमार अनुपम

कुमार अनुपम महत्त्वपूर्ण युवाकवि, चित्रकार एवं कला-समीक्षक हैं। "बारिश मेरा घर है" कविता संग्रह साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित किसी युवा रचनाकार की यह पहली पुस्तक है। इनकी कविताएँ कई महत्त्वपूर्ण संग्रहों में भी प्रकाशित की गई हैं।

We are thankful to:
Write up: Kumar Anupam
Photography: Abhijit Das

Printed at: Reckon Enterprises
131, Patparganj Industrial Area, Delhi-110092

Front Cover: Untitled, Acrylic on Canvas, 36" X 36", 2013
Back Cover: Nature, Acrylic on Canvas, 23" X 16", 2009

Catalogue @ 2013 Dhoomimal Art Centre